छायावाद

डॉ आशा मीणा
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार
Email: ashameena@mgcub.ac.in

छायावाद

- छायावाद का परिचय
- छायावाद की प्रमुख परिभाषाएँ
- छायावाद के प्रमुख कवि
- छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ
- निष्कर्ष

छायावाद

- छायावाद का विकास द्विवेदी युग के पश्चात् हिन्दी हुआ
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद का प्रारम्भ 1918 ई. से माना ।
- छायावाद के नामकरण का श्रेय 'मुकुटधर पाण्डेय' को दिया जाता है । मुकुटधर पाण्डेय ने सर्वप्रथम श्री शारदा पत्रिका (1920 ई) में 'हिन्दी में छायावाद' नामक निबंध में छायावाद शब्द का प्रयोग किया ।
- छायावाद में हिन्दी ब्रज भाषा के स्थान पर खड़ी बोली कविता पूर्णत: प्रतिष्ठित हो गई ।
- इसे साहित्यिक खड़ी बोली का स्वर्ण युग कहा जाता है ।
- छायावाद के प्रमुख कवियों पंत, प्रसाद, निराला की रचनाएँ भी प्रकाशित होना प्रारम्भ हो चुकी थी ।

छायावाद की प्रमुख परिभाषाएँ –

- **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–**
- "छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों से समझना चाहिए एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ उसका सम्बन्ध काव्य वस्तु से होता है, अर्थात् जहां कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यनत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। ..... छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है।''

- **जयशंकर प्रसाद–**
- “जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी में उसे 'छायावाद' के नाम से अभिहित किया गया। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय प्रतीक विधान तथा उपचार वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृति छायावाद की विशेषताएं हैं।”

- **डॉ. रामविलास शर्मा-**
- "छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह नहीं रहा, वरन थोथी नैतिकता, रूढ़िवाद और सामन्ती साम्राज्यवादी बन्धनों के प्रति विद्रोह रहा है। यह विद्रोह मध्यवर्ग के तत्वाधान में हुआ था इसलिए उसके साथ मध्यवर्गीय असंगति, पराजय और पलायन की भावना भी जुड़ी हुई है।''

छायावाद के प्रमुख कवि

- **छायावाद के चार स्तम्भ –**

1. जय शंकर प्रसाद
2. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
3. सुमित्रानन्दन पंत
4. महादेवी वर्मा

- **अन्य कवि:**
- **माखन लाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’, राम नरेश त्रिपाठी, डॉ. राम कुमार वर्मा , लक्ष्मी नारायण मिश्र आदि**

छायावादी काव्य की विशेषताएं

1. आत्माभिव्यंजन-

- छायावादी कवियों ने काव्य की विषय वस्तु अपने व्यक्तिगत जीवन से ही खोजने का प्रयास किया।
- अपने जीवन के निजी प्रसंगों, घटनाओं एवं व्यक्तिगत भावनाओं को अनेक छायावादी कवियों ने काव्य-वस्तु बनाया।
- छायावादी कविता में वैयक्तिक, सुख-दुख की खुलकर अभिव्यक्ति हुई।

- निराला की कई कविताओं में उनके व्यक्तिगत जीवन का सत्य व्यक्त हुआ है।
- 'राम की शक्तिपूजा' में राम की हताशा, निराशा में कवि के अपने जीवन की निराशा की अभिव्यक्ति हुई है।
- उन्हें जीवन भर लोगों के जिस विरोध को झेलना पड़ा उसकी गूंज निम्न पंक्तियों में है -

"धिक जीवन जो पाता ही आया है विरोध।
धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध"।।

- निराला

2. सौन्दर्य - चित्रण

- छायावादी कवि मूलतः प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं; किन्तु उनकी सौन्दर्य भावना सूक्ष्म एवं उदात्त है।
- सौन्दर्य चित्रण में उनकी वृत्ति ब्राह्म वर्णनों में उतनी नहीं, रमी, जितनी आन्तरिक सौन्दर्य के उद्‌घाटन में एवं दशाओं के वर्णन में रमी।
- कामायनी में प्रसाद जी ने श्रद्‌धा के सौन्दर्य का वर्णन निम्न प्रकार किया है -

नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ बन बीच गुलबी रंग।। - प्रसाद

3. श्रृंगार - निरूपण

- द्विवेदी युगीन कविता में श्रृंगार- निरूपण बहुत कम हुआ है जहां हुआ है वहां भी मर्यादित रूप में ही है।
- छायावाद में आकर कविता में पुनः श्रृंगार की प्रतिष्ठा हुई। इन कवियों ने श्रृंगार के संयोग एवं वियोग दोनों पक्षों के आकर्षक चित्र अंकित किए।
- पन्त के काव्य में प्रेम और श्रृंगार भावना की बड़ी सहज अभिव्यक्ति हुई है।

"तुम हो लावव्य मधुरिमा जो असीम सम्मोहन
तुम पर प्राण निछावर करने पागल हो उठता मन।
नहीं जानती क्या निज बल तुम,
निज अपार आकर्षण ?'' – पन्त

4. नारी भावना

- छायावादी कवियों ने नारी के प्रति उदात्त दृष्टिकोण अपनाकर समाज में उसके सम्मानीय स्थान को प्रतिष्ठित किया।
- रीतिकालीन कवियों ने नारी को विलास की वस्तु और उपभोग की सामग्री मात्र माना, जबकि छायावादी कवियों ने उसे प्रेरणा का पावन उत्स मानते हुए गरिमा प्रदान की।
- वह दया, क्षमा, करूणा, प्रेम की देवी है और अपने इन गुणों के कारण श्रद्धा की पात्र है:

  “नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
  विश्वास रजत नग पग तल में।
  पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
  जीवन के सुन्दर समतल में”।। - प्रसाद

- पन्त ने ’देवि, माँ, सहचरि, प्राण कहकर नारी के प्रति अपने आदर का परिचय दिया।

- प्रसाद जी के हृदय में नारी का बहुत ऊँचा स्थान था।
- निम्न पंक्तियों से उनके विचारों को जाना जा सकता है:

"तुम देवि! आह कितनी उदार
वह मातृमूर्ति है निर्विकार।
हे सर्वमंगले! तुम महती
सबका दुःख अपने पर सहती"।।-पन्त

5. रहस्य - भावना

- छायावादी काव्य में रहस्यवाद की प्रवृति भी प्रमुख रूप से उपलब्ध होती है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसी कारण ’छायावाद’ का अर्थ ’रहस्यवाद’ माना है।
- प्रायः सभी छायावादी कवियों ने अज्ञात सता के प्रति ’जिज्ञासा’ के भाव व्यक्त किए हैं।
- पन्त की ’मौन निमन्त्रण’ कविता में इसकी अभिव्यक्ति बहुत सुन्दर ढंग से हुई है।

“न जाने कौन अए द्युतिमन,
जान मुझको अबोध अज्ञान।
सुझाते हो तुम पथ अनजान,
फूंक देते छिद्रों में गान।।

6. प्रकृति - चित्रण

- छायावादी कविता प्रकृति के कुशल चितेरे हैं।
- इन कवियों ने प्रकृति पर मानवीय चेतना का आरोप करते हुए उसे हंसते-रोते हुए भी दिखाया है:

“अचिरता देख जगत की आप,
शून्य भरता समीर निश्वास।
डालता पातों पर चुपचाप,
ओस के आंसू नीलाकाश।।”

7. दुःख और वेदना की विवृति

- छायावादी काव्य में दुःख और वेदना भाव की अभिव्यक्ति हुई है।
- महादेवी तो वेदना की ही कवयित्री है।
- वे अपने वेदना विहल हृदय की तुलना 'मेघखण्ड' से करती हुई कहती है:

  "मैं नीर भरी दुःख की बदली
  विस्तृत नभ का कोई कोना
  मेरा न कभी अपना होना
  परिचय इतना इतिहास यही
  उमड़ी कल थी मिट आज चली।।'' – महादेवी वर्मा
- महादेवी वर्मा के गद्य-पद्य में जो दुःखवाद और करूणा के भाव दिखाई पड़ते हैं, वे बौद्ध दर्शन के प्रभाव स्वरूप माने जा सकते हैं

8. राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति

- छायावादी काव्य में राष्ट्रीयता के स्वर भी मुखरित हुए है।
- प्रसाद जी ने अपने नाटकों में जो गीत योजना की है, उसमें राष्ट्रीय भावना की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है।
- उन्होंने भारत के अतीत गौरव के चित्र अंकित करते हुए देश की महिमा का बखान किया है:

  "अरूण यह मधुमय देश हमारा।
  जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा"।। – प्रसाद

9. शैलीगत प्रवृतियां

- छायावादी काव्य विषय वस्तु एवं शिल्प दोनों ही दृष्टियों से नवीनता लिए हुए है।
- लाक्षणिक भाषा का प्रयोग, प्रतीकात्मक शैली, उपचारवक्रता एवं नवीन अलंकार विधान के कारण इस काव्य में शिल्पगत नवीनता दिखाई पड़ती है।
- पन्त को अग्र पंक्तियों में प्रतीकात्मकता एवं लाक्षणिकता को देखा जा सकता है:

“अभी तो मुकुट बंधा था माथ
हुए कल ही हल्दी के हाथ
खुले भी न थे लाज के बोल
खिले भी चुम्बन शून्य कपोल।
हाय रूक गया यही संसार
बना सिन्दूर अंगार।
वातहत लतिका वह सुकुमार
पड़ी है छिन्नाधार”।। - पन्त

निष्कर्ष

- कविता में जिस चित्रात्मकता भाषा की आवश्यकता होती है और इसी गुण के कारण उससे जो बिम्बग्राहिता आती है छायावादी कवि इस काला मे प्रवीण है ।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल छायावाद के संबंध में कहते हैं –
- "छायावाद की शाखा के भीतर धीरे-धीरे कवि शैली का बहुत अच्छा विकास हुआ, इसमें संदेह नहीं। उसमें भावावेश की आकुल व्यंजना , लाक्षणिक, वैचित्र्य, मूर्त प्रत्यक्षीकरण , भाषा की वक्रता, विरोध चमत्कार, कोमल पद-विन्यास इत्यादि का स्वरूप संघटित वाली प्रचुर सामग्री दिखाई पड़ी ।"

धन्यवाद